सुर साधना

समाज में और प्रकृति के साथ सुर-ताल की साधना
ज्ञान मार्ग

अनियमित पत्रक **वाराणसी ज्ञान पंचायत की पहल** सीमित वितरण के लिए

अंक 7, मई 2025
सहयोग राशि रु. 10/-

साईं वही ज्ञानी है, जो जाणे पर पीड़

सम्पादकीय

वाराणसी को अभय प्राप्त है. मृत्यु का डर नहीं है. आपदा और प्रलय में भी यह कायम रहती है यह मान्यता है. इतिहास के सन्दर्भ में देखें तो यह निरंतर जीवंत नगरी रही है. लेकिन इतिहास-शास्त्र की अवधारणायें साइंस का सहयोग लेकर खड़े हुए औद्योगिक युग के बाद जन्मी हैं और हमारा इतिहास-बोध बहुत कुछ साम्राज्यवादी विचार और राजनीति की जंजीरों में बंधा हुआ है. वाराणसी के 'स्वभाव' को इस शास्त्र की मदद से नहीं समझा जा सकता है. वाराणसी इस भू-भाग का आइना है और अगर यह कहें तो गलत नहीं होगा कि वाराणसी इस भारत भूमि का 'स्वभाव-बीज' है. इतिहास-शास्त्र में हमारे देश की छबि ब्रिटिश विस्तार की आवश्यकता के अनुसार गढ़ी गई है. यह छबि हमारे अंतरमन से तो मेल नहीं ही खाती न हमारे सामाजिक-आर्थिक व्यवहार, मूल्य और व्यवस्थाओं से. हम बराबर एक झूठ से दूसरे झूठ में फंसते जा रहे हैं.

इन्टरनेट और कृत्रिम बुद्धि के बल पर आज फिर कुछ दबंग देश मिलकर अपने साम्राज्य विस्तार की चाहत में दुनिया को युद्ध और बर्बादी की ओर धकेल रहे हैं. झूठी चमक, झूठा गौरव, झूठी शान की प्रतिष्ठा करने में रत हैं. यह महा-प्रलय की शुरुआत है. वाराणसी का सन्देश है कि वाराणसी प्रलय में भी नहीं डूबती क्योंकि यह शिवजी के त्रिशूल पर बसी है. क्या मतलब है?

शिव के त्रिशूल के तीन काँटें विचार और कार्य के किसी भी क्षेत्र पर बहुवाद की पक्षधरता के द्योतक हैं और एकाधिकार के संहारक हैं. बहुलता की पक्षधरता नैतिक, मानवीय और चिरंजीवी जीवन का आधार है. युद्ध और राजनीति में दोनों ही पक्ष अनैतिक होते हैं. जीवन, खुशहाली और रचना का रास्ता बहुजन की स्वायत्त शक्तियों पर आधारित होता है. ये शक्तियां मिलकर ही न्याय का अर्थ और रूप गढ़ने की क्षमता रखतीं हैं.

विद्या आश्रम का शोध प्रस्ताव

बहुजन ज्ञान विमर्श

बहुजन-समाज यानि उन लोगों के समाज, जो उच्च शिक्षित और बुद्धिजीवी नहीं कहलाते. बहुजन-समाज आज कई तरह के अन्याय और प्रताड़नाओं से आज गुजर रहा है. 'बहुजन ज्ञान विमर्श' की प्रस्थापना है कि उसकी अस्मिता, सम्मान और खुशहाली का रास्ता इन समाजों के अपने ज्ञान के बल पर ही बनाया जा सकता है.

21 वीं सदी में पूँजीवादी शक्तियों का अंतर्राष्ट्रीय एका बहुजन समाज को गुमनामी के अंधेरों में धकेलने और निष्क्रिय बनाने (लगभग मिटाने) का ही कार्यक्रम है. इंटरनेट और कृत्रिम बुद्धि पर आधारित तकनीकियाँ इस कार्यक्रम की सहयोगी बनते जाने का संकेत देती हैं. बहुजन समाजों की एकजुटता का आधार उनके लोकस्थ ज्ञान (लोकविद्या) में है. समाज में सही-गलत की पहचान और जीवनमूल्यों के पुनर्निर्माण का कार्य बहुजन समाज के द्वारा ही होता रहा है. सभ्यताओं और संस्कृतियों को गढ़ने का काम भी बहुजन समाज के द्वारा ही होता रहा है. बहुजन ज्ञान विमर्श बहुजन समाज के ज्ञान को सार्वजनिक बहस में ले आने का कार्य है.

ज्ञान की विविध धाराओं के सम्मान की कहानी

फ़ारसी के सुप्रसिद्ध कवि रूमी के दर्शन पर लिखी पुस्तक से
अभय तिवारी की पुस्तक (हिन्द पाकेट बुक्स 2009) से साभार

बसरा शहर इराक देश का महत्वपूर्ण बंदरगाह है. दसवीं सदी के पूर्वार्ध (900-950ई.) कुछ तेजस्वी और मेधावी लोगों का एक दल था जिसका नाम था **इख़्वानुस्सफ़ा (पवित्र बिरादरी).** इस समूह ने एक एन्साइक्लोपेडिया (विश्वकोष) तैयार किया, जिसमें उस समय की तमाम ज्ञान धाराओं पर अपने विचारों को 52 किस्सेनुमा शीर्षकों में विभाजित कर प्रस्तुत किया. इनकी अंतर्वस्तु बहुत विस्तृत और गहन है. इन रसाइल (चिट्ठियों) में से 22 वीं चिट्ठी में आदर्श मनुष्य की चर्चा करते हुए यह लिखा गया है कि – **" एक आदर्श आदमी(व्यक्ति) वह है, जिसमें इस तरह की उत्तम बुद्धि और विवेक हो, जैसे कि वह मूल ईरानी मूल का हो, अरब आस्था का हो, धर्म में सीधी राह की ओर प्रेरित हनीफ़ी हो, शिष्टाचार में इराकी हो, परंपरा में यहूदी हो, सदाचार में ईसाई हो, समर्पण में सीरियाई हो, ज्ञान में यूनानी हो, दृष्टि में भारतीय हो और ज़िन्दगी जीने में सूफ़ी हो"**

सूफ़ी संत

मौलाना मुहम्मद जलालुद्दीन रूमी

(फारसी कवि जिनका जन्म 1207 ईसवीं में अफगानिस्तान के शहर बल्ख में और मृत्यु तुर्किये के शहर कोन्या में 1273 में हुई)

पांव दो हो या चार चलते हैं एक बाट
कैंची के दो पहलू करते हैं एक काट।

देखो उन दो धोबियों को साथ करते काम
बिलकुल हैं उलट एक दूसरे से नज़रे आम।

चादर एक कपड़े की पानी में भिगोता है
और दूजा धूप में चादर को सूखाता है।

भिगाता जो सूखी चादर को है वो कुछ ऐसे
निभाता हो अदावत दूजे साथी से जैसे।

लगते हैं ये दोनों एक दूसरे के दुश्मन
मगर एक दिल है एक जां, उनमें एकपन।

हर नबी, हर वली, देता अलग है पयाम
जाते सब एक हक़ को, एक ही अंजाम।

भाईचारा

गुलाम तुम भी थे यारों गुलाम हम भी थे
नहा के ख़ून में आयी थी फ़स्ले-आज़ादी .

मज़ा तो तब था कि जब
मिलकर इलाज-ए-जां करते
ख़ुद अपने हाथ से
तामीर-ए-गुलसितां करते

हमारे दर्द में तुम और
तुम्हारे दर्द में हम शरीक़ होते
तो जश्न-ए-आशियां करते

तुम आओ गुलशन-ए-लाहौर से चमन बर्दोश
हम आएं सुब्ह-ए-बनारस की रौशनी लेकर
हिमालय की हवाओं की ताज़गी लेकर

और उसके बाद ये पूछें
कौन दुश्मन है ?

- अली सरदार जाफरी

जश्न-ए-आशियां= घरों में जश्न
बर्दोश= कन्धों पर उठाना

बेमिसाल भाईचारा

-प्रेमलता सिंह

वाकया 1972-73 का है। मेरा गाँव उतरौत, वाराणसी से दक्षिण पूरब में लगभग 40 किलोमीटर की दूरी पर है । घर में सबसे बड़ी लड़की मैं, उस समय 20-21 वर्ष की थी. मेरे बाबू जी चिकित्सक थे और सरकारी नौकरी में रहे, लेकिन बाद में नौकरी छोड़कर मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के मानिंद सदस्य व किसान सभा में सक्रिय भागीदार रहे. घटना के समय वे हडौरा कांड के सिलसिले में वाराणसी जिला जेल में कैद थे। इलाके में वे डाक्टर साहब के नाम से जाने जाते थे।

धान की फसल पक चुकी थी। कटाई और फिर गेहूं की बुवाई होनी थी। गाँव के आस-पास का और भभुआर मौजा का काम बाबू जी के काका की निगरानी में घरेलू सहायक की जिम्मेदारी पर तय किया गया। हमारे खेत का बड़ा हिस्सा घर-खलिहान से डेढ़ किलोमीटर दूर जहाँगीरपुर मौजा में था। हमारे पुश्तैनी सहयोगी, जो हलवाही और खेती का सब काम करते थे, एक दिन घर आ माँ से कहे-

"खेत दस दिन में ना कटे तो गेहूँ ना बोवाय सके। खेत कड़ा होई जाई। बच्ची के (यानि मुझे) भेजीं। धान काट, बोझ बना के खरिहानें में गाँज गन्जा दिहल जाई"।

अगले दिन 15 से 20 लोग धान कटनी में लगाए गए। धान काट कर लेहनी लगा। लेहनी का अर्थ है - हसिया से धान काट के कतार से खुला रखते जाना। इसे दो दिन खुले ही छोड़ना होता है ताकि डंठल सूखे और बोझ बनाया जा सके। इसके बाद फिर गाँज गंजा कर यानि एक के ऊपर एक संतुलन बनाते हुए ऊँचाई तक रखा जा सके।

मैं प्रतिदिन खेत जाती। हमारे खेत से लगा हुआ किरीहिडा गाँव के शेख परिवार के खेत थे। लगभग बाबू जी की उम्र के शेख परिवार के एक सज्जन नित्य आते। अपना खेत घूमते और प्रतिदिन सामने की मेंड पर आकर बैठ जाते। हमारे खेत का काम धीरे-धीरे सलटने लगा था। बस एक परिवार की कटनी बहुत थी, बोझ बनाना और ढुलाई का काम शेष था। लेकिन तीसरे दिन ये परिवार देर से आया, कुल चार ही बोझे बांधे। एक एक बोझ पति पत्नी ले गये वापसी में पत्नी नहीं आईं। साँझ गहराती जा रही थी, और वह शेष दोनों बोझों को भी बारी बारी से ले जाने की जिद पर था। मैं सहम गई।

आवाजें तेज़ होती देख शेख साहब हमारे खेत पर आये और उसे कड़ी फटकार लगाई। खुद खड़े होकर दूसरे बोझ को खुलवा लेहनी लगवाई फिर परिवार को ताकीद किया, "लेहनी चोरी हुई तो इसके जिम्मेदार तुम होओगे। कल जल्दी आकर सारा काम खत्म कर देना। याद रहे डॉक्टर साहब (मेरे बाबूजी) घर नहीं हैं, लेकिन हम सब तो हैं "।

हम ऐसे भाईचारे में बड़े हुए।

●

स्वराज

स्वराज के भाव चित्र को उकेरती महाकवि रविन्द्रनाथ टैगोर की कविता का हिंदी के लोकप्रिय कवि भवानीप्रसाद मिश्र द्वारा किया भावानुवाद

चित्त जहाँ भयशून्य , शीश जहाँ उच्च है
ज्ञान जहाँ मुक्त है ,
जहाँ गृह-प्राचीरों ने वसुधा को आठों पहर
अपने आँगन में छोटे-छोटे टुकड़े बनाकर
बन्दी नहीं किया है.
जहाँ वाक्य उच्छवसित होकर
हृदय के झरने से फूटता है
जहाँ अबाध स्रोत अजस्र सहस्रविध चरितार्थता में
देश-देश और दिशा-दिशा में प्रवाहित होता है
जहाँ तुच्छ आचार का फैला मरुस्थल
विचार के स्रोत-पथ को सोखकर
पौरुष को विकीर्ण नहीं करता
सर्व कर्म चिन्ता और आनन्दों के नेता
जहाँ तुम विराज रहे हो,
हे पिता , अपने हाथ से निर्दय आघात करके
भारत को उसी स्वर्ग में जाग्रत् करो.

-कृष्णस्वरूप आनन्दी जी की दीवार से साभार

संवाद युग में यद्ध ?

-चित्रा सहस्रबुद्धे

ये कैसा युग है? नाम तो संवाद युग है और तीव्र से तीव्र गति के संवहन के संवाद का युग है, लेकिन संवाद से मतभेद मिटाने की जगह एक से एक बढ़कर भीषण और भीषणतर होते जा रहे विवाद और युद्धों के दौर से हम गुज़र रहे हैं. दुनिया के लगभग सभी शासकों की भाषा, व्यवहार और व्यवस्थाओं के तौर तरीके उद्धत हो चुके है. जनता में हिंसक और प्रतिशोध लेने के कार्यों और विचारों को प्रोत्साहन मिल रहा है. हर अनैतिक कार्य को महिमामंडित किया जा रहा है. हमारे ही देश में नहीं बल्कि दूसरे कई देशों में कुछ कुछ ऐसा ही हो रहा है. क्या सामान्य मनुष्य ऐसी ही ज़िन्दगी की चाहत रखता है?

सामान्य व्यक्ति बहुजन-समाज का प्रतिनिधित्व करता है. इस संवाद युग में बहुजन-समाज के अन्दर समाहित विविध समाजों के बीच और उनके अपने-अपने नेतृत्व (राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि) के साथ संवाद तेज़ी से ख़त्म हो रहा है. इस संवाद के ख़त्म होने का एक नतीजा यह है कि सार्वजनिक दुनिया से बहुजन-समाज का निष्कासित होना. यानि एक बहुत बड़ी आबादी को लगभग निष्क्रिय बना देना. यह भयंकर स्थिति है. इस स्थिति का मुकाबला करने का मार्ग बहुजन-समाज के शक्ति के स्रोतों को पुनर्जागृत करने में ही हो सकता है और बहुजन-समाज के अन्दर संवाद को बनाना किसी भी लोकपरक बदलाव की पहली शर्त है. ये संवाद मौलिक नैतिक शक्तियों के स्रोत होंगे.

हमारे परिवार के अन्दर हमारे मोहल्लों और कुनबों के अंदर हमारे सामाजिक और सांस्कृतिक संगठनों के अन्दर, हमारे अंचल और प्रदेश में क्या हम केवल सतत् हिंसा और युद्ध के ही रिश्ते पसंद करते हैं? क्या हम ऐसे रिश्ते बनाने में खुद को शामिल करना गौरव की बात मानते हैं? या ऐसे सवाल हमें अपनी साझी विरासत और परम्पराओं से संवाद करने का भी अवसर देते हैं? ये अवसर ही हमें संकटों से मुक्त होने के मार्ग दिखाते हैं .

ये संवाद कैसे और किन माध्यमों से चलाये जाए यह खुद ही अपने में एक संवाद का विषय है, लेकिन इन संवादों में कर्म, वाणी, भाव आदि किसी भी माध्यम की जा सकने वाली हिंसा को स्थान नहीं होना चाहिए. युद्ध की स्थिति को तो नकारा ही जाना चाहिए. बहुजन समाज में सम्मान के साथ संवाद बनाने के इस कार्य को हम **बौद्धिक सत्याग्रह** कह सकते है.

●

वाराणसी ज्ञान पंचायत

वाराणसी ज्ञान पंचायत यह वाराणसी के लोगों, स्त्री-पुरुषों का ज्ञान मंच है. यहाँ ज्ञान पर जन सुनवाई होती है. इस पंचायत में पढ़े-लिखे और अनपढ़, प्रोफ़ेसर और सामान्य स्त्री, कृषि वैज्ञानिक और किसान, टेक्सटाइल इंजिनीयर और बुनकर, जल वैज्ञानिक और मल्लाह आदि में ऊँच-नीच नहीं की जाती. सभी के ज्ञान को बराबरी का दर्जा है. यह ज्ञान पंचायत समाज के हर विचार और कार्य में सभी (बहुजन-समाज) के ज्ञान की भागीदारी की पैरोकार है.

हम युद्ध नहीं, बुद्ध चाहते हैं

-रजनी तिलक की कविता का एक अंश

ये जंग की तलवार हमारे सिर से हटा दो.
बारूद के ढेर पर क्यों खड़ी हो हमारी दुनिया?
हम जंग नहीं चाहते, हम जंग नहीं चाहते,
जीना चाहते हैं.
हम विनाश नहीं सृजन चाहते हैं,
हम युद्ध नहीं, बुद्ध चाहते हैं।

स्रोत : *पुस्तक : दलित निर्वाचित कविताएँ (पृष्ठ 147) संपादक : कँवल भारती रचनाकार : रजनी तिलक प्रकाशन : इतिहासबोध प्रकाशन संस्करण :* 2006 (हिन्दवी से साभार)

वाराणसी ज्ञान पंचायत के लिए लोकविद्या जन आन्दोलन, भारतीय किसान यूनियन, स्वराज अभियान, बुनकर साझा मंच, माँ गंगाजी निषादराज सेवा समिति द्वारा संयुक्तरूप से संयोजित.
[संपर्क : चित्रा सहस्रबुद्धे (9838944822), लक्ष्मण प्रसाद (9026219913), रामजनम (8765619982), फ़ज़लुर्रहमान अंसारी (7905245553), हरिश्चंद्र बिन्द (9555744251)]
पता : विद्या आश्रम, सा 10/82 अशोक मार्ग, सारनाथ, वाराणसी-221007